श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

अप्रैल - प्रथम
अंक - 5

संपादक : डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

Address Here

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

विक्रम संवत् - 2083
वीर संवत् - 2052
ई. सन् - 2026

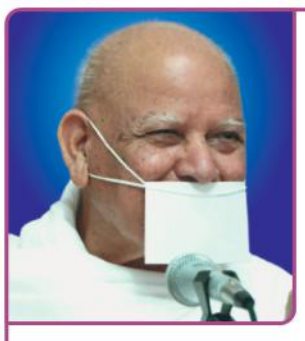

आत्म धर्म के संस्थापक भगवान आदिनाथ

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का प्रथम आहार दिवस अक्षय तृतीया पर्व के रूप में करोड़ों वर्षों के पश्चात् भी मनाया जाता है। प्रभु आदिनाथ को दीक्षा लेने के पश्चात् शुद्ध आहार पानी नहीं मिलने से वे भिक्षा के लिए जाते, किन्तु उन्हें शुद्ध आहार नहीं मिलता, क्योंकि उस काल में सुपात्र दान देने की परम्परा नहीं थी। दीक्षा पूर्व राजा होने के कारण, जैसे राजा को प्रजा भेंट चढ़ाती है। उस तरह की भेंट प्रजा उनको चढ़ाती, किन्तु प्रभु ऋषभदेव का जीवन जो अब एक भिक्षु के रूप में था, वे मौन रहकर वहाँ से लौट जाते, समय बीतता गया, परन्तु उनको सुपात्र दान का योग नहीं मिला। प्रभु ऋषभदेव के मन में भी खिन्नता नहीं थी कि मुझे आहार क्यों नहीं मिल रहा, वे यथा समय प्रतिदिन आहारचर्या के लिए निर्गमन करते, उतने समय में नहीं मिला तो पुनः एकान्त मौन साधना में लीन हो जाते थे। यह क्रम 13 माह तक चलता रहा।

जैन श्रमण को आहारदान का एक दुर्लभ पांडुलिपि चित्र, 18वीं शताब्दी
संग्रह - शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत

प्रश्न होता है कि प्रभु ऋषभदेव ऐसी कौनसी साधना करते थे जिससे उनको कषाय भाव नहीं आया, वो क्या साधना थी? वे कौन से धर्म की आराधना कर रहे थे। उन्होंने कौन से धर्म की स्थापना की, जो आज करोड़ों वर्षों के बाद भी वह परम्परा भरत क्षेत्र में चल रही है। उनके नाम पर अभी भी हजारों लोग वर्षीतप की आराधना कर रहे हैं।

वर्तमान में भरत क्षेत्र में अनेक धर्म के नाम चलते हैं, उनमें जैन धर्म का अपना गौरव है। वर्तमान में चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर प्रभु ऋषभदेव थे, जिनकी परम्परा आज भी चल रही है। प्रश्न होता है उनकी साधना का रहस्य क्या था? तो वर्तमान तीर्थंकर सीमन्धर स्वामी फरमाते हैं। जैन धर्म में जन्म लेने से कोई जैन कहला सकता है, परन्तु उससे वह सिद्ध (कर्म मुक्त) नहीं हो सकता। जब तक उसमें आत्म धर्म न हो।

क्या है आत्म धर्म : आत्म धर्म अर्थात् जहाँ प्रार्थना नहीं, याचना नहीं, शिकायत नहीं, प्रतिक्रिया नहीं, जहाँ कर्त्ता-भोक्ता भाव नहीं, जहाँ मन मौन हो जाता है। आत्मा अपने स्वभाव ज्ञाता-दृष्टा भाव में स्थित हो जाती है। उसे आत्म धर्म कहा जाता है। आत्म धर्म के मुख्य तीन सिद्धांत है।

भेद विज्ञान : कर्म सिद्धांत व अनेकान्तवाद इस दृष्टि से प्रभु आदिनाथ के जीवन व साधनाकाल को देखते हैं तो हमें उनकी साधना के रहस्य प्रकट हो जाते हैं। (क्रमशः)

अध्यक्षीय

संगठन की शक्ति समाज की प्रगति का आधार

- अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : ajvk1973@gmail.com

किसी भी समाज की वास्तविक शक्ति उसके संगठन में निहित होती है। संगठित समाज ही अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होता है, जबकि बिखरा हुआ समाज अपनी क्षमता होते हुए भी अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाता।

हमारा जैन समाज विचार, संस्कार और सिद्धांतों से समृद्ध है, परन्तु इन मूल्यों को प्रभावी रूप से समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने के लिए सशक्त संगठन आवश्यक है। संगठन केवल पदों और संरचना का नाम नहीं है, बल्कि यह आपसी विश्वास, समन्वय और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना का प्रतीक है।

आज समय की माँग है कि हम व्यक्तिगत सोच से ऊपर उठकर सामूहिक दृष्टिकोण अपनाएँ। संगठन तब मजबूत होता है जब हर कार्यकर्ता स्वयं को महत्वपूर्ण समझते हुए अपने दायित्व का निर्वहन ईमानदारी से करता है।

युवा शक्ति संगठन की ऊर्जा है और महिला शक्ति उसकी संवेदना। वरिष्ठजनों का अनुभव और मार्गदर्शन संगठन को स्थिरता प्रदान करता है। जब ये तीनों आयाम एक साथ कार्य करते हैं, तब संगठन अपनी पूर्ण क्षमता में कार्य करता है।

हमें यह समझना होगा कि संगठन का विस्तार केवल संख्या बढ़ाने से नहीं होता, बल्कि सक्रियता, अनुशासन और निरंतर संवाद से होता है। प्रत्येक इकाई, प्रत्येक शाखा और प्रत्येक कार्यकर्ता संगठन की मजबूती की कड़ी है।

आज आवश्यकता है कि हम संगठन को केवल कार्यक्रमों तक सीमित न रखें, बल्कि इसे समाज परिवर्तन का माध्यम बनाएं। सेवा, संस्कार और सामाजिक उत्तरदायित्व के कार्यों के माध्यम से ही संगठन की वास्तविक पहचान बनती है।

हम सबका यह दायित्व है कि हम संगठन को और अधिक सशक्त, सक्रिय और प्रभावशाली बनाने में अपना योगदान दें। जब संगठन मजबूत होगा, तब समाज स्वतः सशक्त होगा।

आइए, हम सब मिलकर संकल्प लें कि हम संगठन को सर्वोपरि रखते हुए एकजुटता, अनुशासन और समर्पण के साथ आगे बढ़ेंगे।

सम्पादकीय

विदा की बेला में समाधि का आलोक

आधुनिक कानून में प्राचीन जैन दर्शन की गूंज

- डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस

मेरे प्रिय पाठकों,

आज कलम हाथ में है, तो मन कुछ भारी भी है और कुछ वैचारिक मंथन में डूबा हुआ भी। पिछले दिनों गाजियाबाद के श्री हरीश राणा के संदर्भ में जो समाचार आया, उसने मुझे गहराई तक सोचने पर विवश कर दिया। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बाद एम्स के डॉक्टरों की देख-रेख में उन्होंने जिस तरह 'सहज मृत्यु' को गले लगाया, वह केवल एक कानूनी पन्ने की इबारत नहीं है। मेरे लिए वह आधुनिक युग में हमारी उसी प्राचीन 'संथारा' या 'संलेखना' साधना का एक प्रतिबिंब है, जिसे हम जैन ध्युगों-युगों से आत्मसात करते आए हैं।

अक्सर दुनिया इसे 'आत्महत्या' (Suicide) समझने की भूल कर बैठती है। लेकिन सच कहूँ तो, संथारा और आत्महत्या के बीच का अंतर उतना ही बड़ा है जितना 'अंधेरे' और 'प्रकाश' के बीच होता है। आत्महत्या वह क्षण है जब इंसान हार जाता है, टूट जाता है और क्रोध या अवसाद में अपनी जीवनलीला समाप्त कर लेता है। लेकिन संथारा? संथारा तो वह 'महोत्सव' है जहाँ एक साधक जीत जाता है-अपनी इंद्रियों से, मोह से और स्वयं मृत्यु के भय से।

हरीश राणा का मामला आज एक बड़ी बहस का केंद्र है। कानून इसे 'इच्छा मृत्यु' कह रहा है, लेकिन यदि हम अपनी जड़ों की ओर लौटें, तो पाएंगे कि यह तो 'समता भाव' की पराकाष्ठा है। जब यह नश्वर शरीर जर्जर हो जाए, जब साँसें साधना में सहायक होने के बजाय बोझ बनने लगें, तब उस देह को विदा करना कायरता नहीं, बल्कि अदम्य साहस का परिचायक है।

मुझे इस बात की खुशी है कि आज आधुनिक न्यायशास्त्र भी उसी 'गरिमापूर्ण मृत्यु' (Dignity in Death) की वकालत कर रहा है, जिसकी नींव हमारे तीर्थंकरों ने हजारों साल पहले 'संलेखना' के रूप में रखी थी। संथारा कोई 'अंत' नहीं है, बल्कि यह तो आत्मा की एक नई और पवित्र यात्रा का 'प्रारंभ' है।

धर्मावलंबी कई बार बुद्धिजीवियों की चर्चा में यह प्रश्न स्वाभाविक उठता है कि यह प्रथा बहुत कठोर है। लेकिन मैं उनसे बस इतना ही कहता हूँ-क्या हफ्तों तक वेंटिलेटर पर मशीनों के सहारे बेजान पड़े रहना 'जीवन' है? नहीं! जीवन तो वह है जो पूर्ण चैतन्य और विवेक के साथ जिया जाए और मृत्यु वह है, जो बिना किसी शिकवे के, सबको क्षमा करते हुए और स्वयं से क्षमा मांगते हुए, एक दीपक की तरह शांत हो जाए।

आज का यह संपादकीय संदेश मैं विशेष रूप से उन लोगों के लिए लिख रहा हूँ, जो संथारा को संशय की दृष्टि से देखते हैं। यह आत्महत्या नहीं, यह तो 'आत्म-बोध' है। यह हार नहीं, यह तो 'महाप्रयाण' की तैयारी है। हरीश का मामला हमें सिखाता है कि कानून भले ही आज जागृत हुआ हो, लेकिन जैन दर्शन ने मृत्यु को मंगलमय बनाने का मंत्र सदियों पहले ही दे दिया था। मैं चाहता हूँ कि हम इस विषय पर अपनी संकीर्णताओं को त्यागकर विचार करें। आइए, मृत्यु से डरना नहीं, बल्कि उसे एक साधना की तरह गरिमापूर्ण बनाना सीखें।

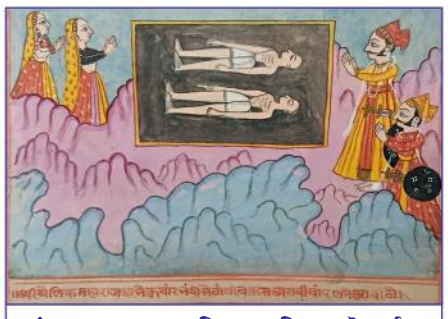

संथारारत धन्ना शालिभद्र मुनिराज के दर्शन करने आए श्रेणिक राजा अभय कुमार एवं महारानियां, एक दुर्लभ पांडुलिपि चित्र
धन्ना शालिभद्र चौपाई संवत 1823
संग्रह - शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत

NAMOKAR METALS

S.K. Jain

Deals in: Ferrous Non Ferrous &
All Kinds of Industrial Scrap

अंकुर जैन
राष्ट्रीय युवा चैयरमैन
जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

Plot No.-5, SarurPur Ind. Area.
Nangla gujran, Near Nagar chowk, Faridabad
E-mail : namokarmetals@gmail.com Mobile : 9811601241

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय पदाधिकारीगण
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के राष्ट्रीय पदाधिकारीगण

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई 98410 30035

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति

राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री महावीर रांका जैन, पोलुर	94442 04046
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी	98151 84811
श्री संजय जैन, दिल्ली	98111 67770
श्री डिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर	78699 99222
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे	98230 82152

राष्ट्रीय समन्वय समिति

श्री प्रशांत जैन, 'गांधरा' दिल्ली (मुख्य समन्वयक)	98101 21450
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (ज़ोन - 1)	98842 21003
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (ज़ोन - 2)	98150 20661
श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा (ज़ोन - 3)	94141 13056
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर (ज़ोन - 4)	98237 99998
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (ज़ोन - 5)	98251 35744

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली 98681 25710

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573
श्री पुखराज मेहता जैन, बैंगलोर	98446 77725
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री दिनेश कुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888
श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला	94667 01008
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	98106 72111
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर	95117 05291
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	94222 46500
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94222 22138
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	94205 85878
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे	98220 34344
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली 98102 78217

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बैंगलोर	98440 58123

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर	98270 31032
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मनीष बाफना जैन, सूरत	93749 86671
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर	93021 27805

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	94224 59362
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल वड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई	98200 72121

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली	98112 39872
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली	98117 48722
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली	98101 63165

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, वैजापुर	94214 18121

जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, औरंगाबाद	94207 64456

हर प्रांत जैन भवन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली	98110 12512
राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे	90110 17777

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर वीर जैन	98110 70722
राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन	93108 99904
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन	98187 25000
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन	98110 39625
राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन	96549 73690

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	98226 59910
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांड़', मोहाली	93185 93599

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटाईजेशन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिदड़बाहा	98146 99393
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बैंगलोर	98445 46014
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली	93501 32274
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली	98101 93101
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना	98141 05020

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली	93191 87434
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन ' प्रथम', दिल्ली	97117 74004
राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन	94604 45060

राष्ट्रीय युवा शाखा

अध्यक्ष : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456
चेयरमैन : श्री अंकुर जैन, दिल्ली	98711 98111
कार्याध्यक्ष : श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत	93745 44138
महामंत्री : श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	91522 11555
कोषाध्यक्ष : श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली	99998 38345

राष्ट्रीय महिला शाखा

अध्यक्षा : श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
चेयरमैन : श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत	94278 08401
वाईस चेयरमैन : श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली	98187 44166
वरिष्ठ उपाध्यक्षा : श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत	92515 74016
महामंत्री : श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना	79737 96548
कोषाध्यक्षा : श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली	92504 18306

प्रांतीय अध्यक्ष

श्री प्रकाश बुरड़ जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98456 71449
श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98490 11350
श्री वी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	94444 31536
श्री अनिल जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98141 40491
डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	92541 19621
श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	97203 57112
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री आनंद चपलोत जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94609 66507
श्री हुलास बेताला जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	96696 97797
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	94222 50478
श्री नितिन बेदमुथा जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	93710 75787
श्री सम्पत खाविया जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98250 47321

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद	92461 58452
श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई	98402 00916
श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री अरूण कुमार जैन, लुधियाना	98155 66885
श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत	98960 92861
श्री नितिन जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री नरेश जैन 'रिंढ़ाना', दिल्ली	98100 66701
श्री दिलीप रूणवाल जैन, दिल्ली	98112 05545
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	93222 56788
डॉ. सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर	99818 50900
श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर	94250 62147
श्री मीठालाल कांकरिया जैन, औरंगाबाद	98226 71574
श्री वसंत लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94212 05000
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुलिया	94231 93447
श्री कैलाश प्रकाश बाफना जैन, औरंगाबाद	93726 66999
श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई	98212 87789
श्री विलास राठौड़ जैन, पुणे	98901 74007
श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत	94287 45537

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना	94172 53101
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे	93710 89896
श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू	94191 90527
श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर	94626 72015

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई	99412 45660
श्री संजीव जैन 'आनंदमु', दिल्ली	93122 40901
श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे	98224 07446
श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई	98200 83919
श्री त्रिलोक जैन, दिल्ली	98681 06607

प्रांतीय महामंत्री

श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक)	99649 72251
श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना)	92473 99003
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री संजय जैन (हरियाणा)	98130 50937
श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश)	98371 09567
श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली)	98111 38968
श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान)	98280 50143
श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश)	94254 00121
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र)	98220 79225
श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे)	99218 79613
श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात)	94279 30764

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति

एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां	90504 00009
एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़	98141 90422
एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत	90347 19097

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति

सदस्य : श्री संजय ताराचंद कोटेचा जैन, जलगांव	99237 11711
सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई	98339 57170
सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, वाघोली, पुणे	80876 35657
सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली	99996 10010
सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जीन्द	92554 30824

वरिष्ठ मार्गदर्शक

श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा)	92113 08367
श्री जसवंत दलाल जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)	98863 88021
श्री शांतिलाल पोखरणा, बैंगलोर (कर्नाटक)	98451 55799
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	98401 96758
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94433 32330
श्री पदमचंद बागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94440 77990
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब)	95012 33866
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब)	98559 39174
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब)	98140 88391
श्री राजेश जैन, लुधियाना (पंजाब)	98761 71831
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा)	94161 22219
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	98962 00081
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा)	93556 71998
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	99963 33388
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा)	98122 00002
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा)	99927 33822
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा)	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)	98370 67082
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)	98100 78214
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश)	99270 62009
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौत (उत्तर प्रदेश)	99974 55741
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली	93124 33320
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98112 52316
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली	99994 73873
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98371 74345
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99716 65599
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	92158 99904
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99999 97513
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98100 50467
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98102 64999
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली	93109 89999
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली	98110 16545
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली	88266 72626
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली	98111 30285
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली	98100 21710
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली	98114 04140
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली	98737 76896
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	88600 98595
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98187 25000
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98112 33462
श्री बजरंगलाल जैन, दिल्ली	93122 62192
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94601 71190
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान)	98140 10385
श्री महावीर कुमार बाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94147 38976
श्री गौतम संचेती जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94142 58370
श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान)	88753 26779
श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94628 83336
श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94141 66639
श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)	98298 86701
श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94146 17494
श्री पकंज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 11902
श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 12134
श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	98293 47007
श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 84005
श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान)	94143 26293
श्री अम्बालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान)	98290 40800
श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98930 33345
श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98260 20161
श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	93021 22995
श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94074 13922
श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94253 19691
श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98270 31960
श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	96302 55540
श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश)	73662 31275
श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 28737
श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98270 06500
श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 08682
श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94251 01014
श्री यशवंत सिंह बाफना जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94254 87623
श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	98909 52621
श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	99234 78889
श्री शोभाचंद संचेती जैन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)	94051 07851
श्री हसमुख बंबकी जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र)	94224 29611
श्री जीवनराज पुनमिलया जैन, इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	92258 31765
श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहमदनगर (महाराष्ट्र)	
श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98201 11839
श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र)	98699 09374
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	
श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98212 20220
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	87882 35525
श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	98230 81825
श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	97662 90002
श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेशवर (गुजरात)	99250 20407
श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात)	93745 35686
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात)	93277 57610
श्री हीरालाल खाविया जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	94270 31776
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	

ALDACO
AIM HIGH

Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi

SS1008
₹1490/-

SM-4
₹1325/-

LP-28
₹875/-

Al-cs-flx-112
₹1490/-

LP-32
₹875/-

SM-5
₹1375/-

DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR
9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com

गुणों का गुलदस्ता - श्रमण संघ

- युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.

स्थानकवासी श्रमण संघ का निर्माण संघटन की आधारशिला पर हुआ। संघटन में सम्मिलित प्रत्येक परम्परा तथा मुनिराजों-महासतियों के सत्व की सुरक्षा को लक्ष्य में रखकर संविधान का निर्माण हुआ। लोकतंत्र के मूल्यों का सम्यक्तया निर्वाह हो ऐसी व्यवस्था बनी। एकाधिकार नहीं जनाधिकार, दबावतंत्र नहीं स्वतंत्रता यह समाचारी का मूल उद्घोष रहा। यह कारण है कि विगत 75 वर्षों से श्रमण संघ की विशिष्ट पहचान तथा साख है। इस स्वतंत्रता को स्थापित करने वाले, प्रदान करने वाले महापुरुषों ने स्वतंत्रता का अर्थ संघ के प्रति अपना निजी दायित्व जाना, माना, अपनाया और मूर्तरूप दिया। अपने वाणी-व्यवहार-आचार में मर्यादाओं का पालन दबाव से नहीं स्वेच्छा से किया। "वरं में अप्पा दंतो, संजमेण तवेण य।" मैं अपने आपको स्वयं नियंत्रित करूं, अपनी इच्छाओं का दमन करूं। भगवान् महावीर के इस संदेश का अनुसरण श्रमण संघ के प्रत्येक सदस्य ने किया। उनकी शुद्ध निर्मल, सरल प्रज्ञा ने स्वतंत्रता के वास्तविक अर्थ, उद्देश्य को आत्मसात किया।

श्रमण संघ व स्वतंत्रता : यह स्वतंत्र साधक की शक्ति को उजागर करने वाली रही। लेखन - चिंतन - विचरण - प्रवचन - अध्ययन आदि में इस स्वतंत्रता ने साधकों को आगे बढ़ने की ऊर्जा दी। यही कारण है कि श्रमण संघ में विविधता के दर्शन होते हैं। आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. की अनेक आगमों पर विस्तारयुक्त व्याख्याएं, युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म.सा. द्वारा समग्र आगम बत्तीसी के सटीक विवेचन कार्य, आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि म.सा. द्वारा आगम-दर्शन-सिद्धांत, मनोविज्ञान, प्राचीन कथा साहित्य आदि पर विशाल ग्रंथ सम्पदा का निर्माण, यह श्रमण संघ में विद्यमान वातावरण के कारण ही संभव हुआ, हो रहा है। जैन दिवाकर चौथमलजी म.सा. की साहित्य सम्पदा श्रमण संघ की बहुमूल्य धरोहर है। अनेक कवि, लेखक, साहित्यिक, मनीषी संत-सतीजी श्रमण संघ के गौरव स्थान है। चिंतन के क्षेत्र में विविध विषयों पर मार्गदर्शन, तात्विक विषयों पर मौलिक लेखन, प्राचीन आधुनिक विद्या का समुचित समन्वय श्रमण संघ के अनेक सुधीजनों द्वारा समय-समय पर किया जाता है।

श्रमण संघ का विचरण क्षेत्र : दक्षिण भारत में स्थित जैन परिवार एवं जैन समाज को धर्म क्षेत्र में बनाए रखने में तथा आगे बढ़ाने में श्रमण संघ के साधु-साध्वीवृंद का विशेष पुरुषार्थ एवं उपकार रहा हैं। अनार्य क्षेत्र, अनेक विघ्न-बाधाएं, ठहरने, आहार-पानी के उपलब्धता की अनेक असुविधाएं, असाता की परवाह किए बिना उन प्रान्तों में रहने वाली श्रद्धालु जनता को धर्म मार्ग प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य श्रमण संघ के द्वारा हुआ है। जिस समय अन्य स्वतंत्र सम्प्रदाय के साधु-साध्वी हमारे संयम में दोष लगेगा, संघ में शिथिलाचार बढेगा आदि-अनेक कारण देकर जिन क्षेत्रों में विचरण से कतराते थे, उन क्षेत्रों में जाकर चातुर्मास, शेषकाल प्रवास के लिए जाने का कार्य केवल श्रमण संघ ने प्रारंभ किया। उस विचरण से साधु-साध्वीवृन्द के प्रति श्रद्धा भाव की अभिवृद्धि हुई। उन क्षेत्रों में विचरण से नई पीढ़ी को जैनेतर जनता को संतों का, धर्म का परिचय हुआ। विशाल तथा उदार मतवादी संघ होने से उन्होंने सभी परम्पराओं के चारित्र आगमों का भावपूर्ण स्वागत किया, सम्मान किया।

श्रमण संघ की प्रवचन शैली : श्रमण संघ की विविधता के कारण भिन्न-भिन्न परम्पराओं से प्राप्त विविध पद्धतियों के कारण प्रवचन में भी विविधता, विशेषता है। अन्य अनेक स्वतंत्र परम्पराओं में प्रवचन अधिकांशतः साधुचर्या आदि से सम्बन्धित पारंपरिक विषयों पर ही होते हैं। श्रमण संघ के प्रवचनों में भारतीय संत साहित्य के अनेक उदाहरण जैन-जैनेतर जनता को जैन धर्म तथा संतों के प्रति आस्था वृद्धिंगत कराते हैं। अनेकों प्रवचन प्रभावक मुनिराज तथा महासाध्वीजी ने अपनी प्रतिभा एवं वाणी की मधुरता से जिनशासन की महत्ती प्रभावना की हैं। अपने ग्रामानुग्राम विचरण द्वारा प्राप्त संस्कार तथा प्रस्तुति की विशेषता ने उन्हें यह शक्ति प्रदान की हैं। प्रवचन कला को विकसित विस्तारित किया। उसे नवीनतम विषयों द्वारा अद्यावत किया गया है। इस प्रकार की विविधता जिनवाणी तथा धर्म के प्रति अनेक श्रद्धालुओं को आकर्षित करती है।

श्रमण संघ व उदारवाद : प्राकृत, संस्कृत, आगम आदि प्राचीन ग्रंथों की मूल भाषा तथा हिन्दी, अंग्रेजी आदि प्रचलित जनभाषा के साहित्य का अध्ययन अनेक परम्परा के संघाड़ों में विस्तृत रूप से चला। दर्शन शास्त्र के अध्ययन में जैन दर्शन तथा अन्य दर्शनों के व्यापक बोध का अवसर प्राप्त हुआ। स्व-समय, पर-समय विशारद निपुण बनने में इसका उपयोग हुआ। जैनेतर सिद्धान्तों, मान्यताओं के साथ ही अन्य दर्शन के विषय में प्रचलित भ्रांतियों का निराकरण हो जाता है। आज अनेक परम्पराएं एकान्त पक्षीय आग्रह के कारण पारस्परिक विद्वेष के निमित्त बन जाते हैं। राग-द्वेष से ग्रस्त होते हैं, उससे बचाव होता है। दृष्टि विशुद्ध बनती है। आज अनेक स्वतंत्र परम्परा के अनुयायी अपने पक्ष के स्वीकार-सम्मान-समर्पण एवं अन्य पक्ष के प्रति अनादर, तिरस्कार विरोध को भावों की दृढ़ता मानते हैं, जिससे वे अधिक मिथ्यात्व अहंकार में डूब जाते हैं। व्यापक अध्ययन ने श्रमण संघ में उदारता को स्थान दिया हैं अपने धर्म, परम्परा के प्रति आस्था-समर्पण का अर्थ औरों को तुच्छ मानना नहीं है, यह समझ विकसित की।

श्रमण संघ व साहित्य रचना : श्रमण संघ के चारित्रात्माओं को काव्य प्रतिभा अतुलनीय रही। भाव-भाषा-शैली की उत्कृष्टता से जैन दर्शन के सिद्धान्तों को जीवन के शाश्वत मूल्यों को सरलता से प्रस्तुत किया गया है। अनेक स्तवन, गीत, भजन जो जनमानस को भक्ति से सरोबार कर देते हैं। अंतर हृदय को झंकृत कर देते हैं। इन रचनाओं का श्रेय हमारी उन महान प्रतिभाओं को संप्राप्त है।

हमारा दायित्व है कि हम उन विशेषताओं को संरक्षित रखें, संवर्धित करें। आधुनिकता तथा सुविधाओं के व्यामोह में हम अपनी विशेषताओं से वंचित न हो जायें। कोरोना के कारण ऑनलाईन स्कूली शिक्षा ने जैसे आज की पीढ़ी की शिक्षा में एक भूचाल लाया है। लिखना-पढ़ना बोझ सा लगने लगा है। लेखन वाचन से होने वाले मस्तिष्क के स्वाभाविक विकास में अवरोध उत्पन्न किया है। हमें भी अपनी प्रतिभा का सर्वांगीण उपयोग करके हमारे उपकारी महापुरुषों की उस दिव्य परम्परा को आगे बढ़ाना है। हमारे लिए प्रदत्त श्रमण संघ के स्वतंत्र अधिष्ठान का उपयोग शक्ति जागरण-शक्ति विकास में करना है। स्वतंत्रता यदि स्वच्छंदता रूप ले तो वह शक्ति ह्रास एवं शक्ति विनाश का कारण बन सकती है। लेखन-चिंतन-वाचन-अध्ययन आदि के स्वातंत्र्य को सम्यक रूपेण आत्मसात करने का संकल्प श्रमण संघ की गरिमा को वास्तव में अक्षुण्ण रख सकता है। गुणों का गुलदस्ता महकता रह सकता है।

श्रमण संघ की आचार्य परम्परा

- प्रमुख मंत्री
श्री शिरीष मुनि जी म.सा.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की स्थापना सन् 1952 में हुई। जिसका उद्देश्य-(1) सत्य पर श्रद्धान् कर सम्यक् दर्शन को परिपक्व बनाना (2) सत्य का ज्ञान अर्थात् भेद विज्ञान द्वारा जहाँ भेद की आवश्यकता है वहाँ भेद करें अर्थात् शरीर व आत्मा का भेद करें। (3) अभेद दृष्टि तीर्थ के प्रत्येक सदस्य में अभेद दृष्टि से अपने समान आत्मा के दर्शन करें, जिससे छोटे-बड़े, ऊँचे-नीचे, अपने-पराये के कारण होने वाले कर्म बन्धन रूके। (4) व्यवहार में हम भेद-विज्ञान के द्वारा - परस्परोपग्रहो जीवानाम् के सूत्र को आत्मसात् करते हुए जिन शासन, जिनवाणी को प्रमुखता देवें। (5) मित्ति में सव्व भूएसु के सूत्र को आत्मसात करें। सबका सम्मान, सबका विकास, सबमें समान आत्मा के दर्शन करें। (6) निश्चय और व्यवहार धर्म को आत्मसात् करने वाला श्रमण संघ आज भी उसी उदार भावना से जिनशासन की सेवा में अपनी भूमिका निभा रहा है।

श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज बने। जिनका जीवन आत्मा में राम व राम में आत्मा को आत्मसात करता रहा। उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. बने। जिन्होंने अपने ज्ञान व क्रिया से श्रमण संघ के उत्थान में सहयोग दिया। उस समय के सभी पूज्यवरों ने अपने व्यक्तित्व का त्यागकर अस्तित्व को महत्त्व देकर श्रमण संघ की स्थापना में आधार बने। हम उनको स्मरण कर उनके त्याग की हमेशा अनुमोदना करते रहें। वे हमारे आदर्श हैं प्रथम पट्टधर ने आगमों की टीका लिखकर समाज को दिशा प्रदान की। आगम चक्खु दिये व संस्कृत, प्राकृत के पठन-पाठन को महत्त्व दिया।

द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. जिन्होंने आनन्दपूर्वक समता के साथ ज्ञान प्रसार में सहयोगी बनकर प्रथम पट्टधर के कार्य को आगे बढ़ाया। धार्मिक परीक्षा बोर्ड़ पाथर्डी के माध्यम से साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका में ज्ञान-ध्यान बढ़ाने में सामायिक से लेकर विशारद प्रभाकर शास्त्री व आचार्य तक की परीक्षा के पाठ्यक्रम बनाकर संघ की नींव को मजबूत किया व संगठन को सुदृढ़ किया।

प्रथम युवाचार्य पूज्य श्री मिश्रीलाल जी म.सा. 'मधुकर' ने आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्मारामजी म.सा. द्वारा आगम सम्पादन के कार्य को आगे बढ़ाया। विभिन्न साधु-साध्वियों के सहयोग से सम्पूर्ण आगम बत्तीसी का सम्पादन करवाया, जो आज भी चारों तीर्थों में स्वाध्याय के आधार ग्रन्थ बन गये हैं।

पूना सम्मेलन में आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. की नेश्राय में विशाल साधु-सम्मेलन हुआ, जिसमें देशकाल परिस्थिति अनुसार निश्चय धर्म को सुरक्षित रखते हुए व्यवहार में सामान्य परिवर्तन किए गए। तृतीय पट्टधर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्रमुनिजी ने अपने संक्षिप्त कार्यकाल में साहित्य सेवा के साथ संघ में मैत्री प्रेम का वातावरण बनाए रखते हुए श्रमण संघ को संगठित रखा।

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर वर्तमान आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. ने सन् 1999 से श्रमण संघ को अनुशासित करते हुए ज्ञान के साथ ध्यान से जोड़ने का पुरुषार्थ किया व कर रहे हैं। प्रथम आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी के आगम पुनः मुद्रित करवाकर चतुर्विध संघ को उपलब्ध करवाए। तीर्थंकरों की मूल आत्म-ध्यान, भेद विज्ञान, स्वरूप बोध की साधना विधि जो भरत क्षेत्र में लुप्त प्रायः थी उसे पुनः महाविदेह से भरत क्षेत्र में प्रत्येक तीर्थवासी के लिए उपलब्ध करवाई। उस साधना को विधिवत प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए आत्म-ध्यान धर्म यज्ञों के माध्यम से संघ में आध्यात्मिक वातावरण बनाने के लिए निमित्त बन रहे हैं। (क्रमशः)

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर मामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

प्रमाद से प्रमोद
सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार
लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 12

कर्ताभाव के प्रकार
(सांसारिक, पारिवारिक और आध्यात्मिक)
(गहन विस्तार)

कर्ताभाव केवल एक सामान्य मानसिक प्रवृत्ति नहीं है। उसकी कई परतें हैं, कई रूप हैं। कभी वह जिम्मेदारी के रूप में दिखता है, कभी प्रेम के रूप में, कभी नेतृत्व के रूप में, और कभी आध्यात्मिक साधना के रूप में। यदि इन रूपों को अलग-अलग न पहचाना जाए, तो कर्ताभाव सूक्ष्म स्तर पर जीवित रहता है और व्यक्ति समझ भी नहीं पाता कि वह अभी भी उसी में बंधा है।

1. सांसारिक कर्ताभाव यह कर्ताभाव सबसे स्पष्ट रूप में दिखता है। व्यापार, पद, उपलब्धि, सफलता इन सब में व्यक्ति स्वयं को कर्ता मानता है। "मैंने यह स्थापित किया।", "मेरे प्रयास से यह बढ़ा।", "मेरे निर्णय से यह संभव हुआ।", यहाँ तक यह स्वाभाविक है। पर जब यह पहचान बन जाए, तो तनाव उत्पन्न होता है। सांसारिक कर्ताभाव की विशेषताएँः 'परिणाम से गहरा जुड़ाव', 'असफलता में तीव्र आघात', 'आलोचना पर आंतरिक अस्थिरता', 'निरंतर नियंत्रण की इच्छा', यदि ये संकेत हों, तो समझना चाहिए कि कर्ताभाव कठोर हो चुका है।

2. पारिवारिक कर्ताभाव यह कर्ताभाव अधिक सूक्ष्म है। "मुझे ही सब संभालना है।", "मेरे बिना परिवार नहीं चल सकता।", "मैं ही सबकी रक्षा कर सकता हूँ।" यहाँ प्रेम के भीतर कर्ताभाव छिपा होता है। धीरे-धीरे यह प्रेम से नियंत्रण में बदल सकता है। पारिवारिक कर्ताभाव की पहचानः 'दूसरों को स्वतंत्र न छोड़ पाना', 'हर निर्णय में हस्तक्षेप', 'त्याग के भीतर अपेक्षा', 'सेवा के भीतर मान्यता की चाह', यह कर्ताभाव अक्सर पुण्य के रूप में दिखाई देता है, पर भीतर बोझ पैदा करता है।

3. सामाजिक या नेतृत्व कर्ताभाव जब व्यक्ति नेतृत्व की स्थिति में होता है, तो कर्ताभाव और भी सूक्ष्म हो जाता है। "मेरे बिना व्यवस्था नहीं रहेगी।", "मैं हट गया तो सब बिखर जाएगा।", यहाँ जिम्मेदारी वास्तविक हो सकती है। परंतु भीतर यदि भरोसा न हो, तो नेतृत्व तनाव बन जाता है। सच्चा नेतृत्व माध्यम बनता है। कर्ताभाव वाला नेतृत्व नियंत्रण बन जाता है।

4. आध्यात्मिक कर्ताभाव यह सबसे सूक्ष्म और गहरा है। "मैं साधना कर रहा हूँ।", "मैंने यह अनुभव प्राप्त किया।", "मैं आगे बढ़ चुका हूँ।", यहाँ व्यक्ति आध्यात्मिक उपलब्धि को भी अपनी पहचान बना लेता है। आध्यात्मिक कर्ताभाव की पहचानः 'अनुभवों को दोहराने की इच्छा', 'दूसरों से तुलना', 'स्वयं को जागरूक मानना', 'गिरावट आने पर आघात' जब साधना भी "मैं" को पोषित करे, तो प्रमाद अत्यंत सूक्ष्म रूप में जीवित रहता है।

5. त्याग का कर्ताभाव कभी व्यक्ति त्याग करता है, पर भीतर सूक्ष्म अपेक्षा रहती है। "मैंने इतना किया।", "मुझे समझा नहीं गया।", "मेरे योगदान को देखा नहीं गया।", यह त्याग नहीं, अहंकार का एक तमपिदमक रूप है।

6. कर्ताभाव का सामान्य सूत्र चाहे वह किसी भी रूप में हो, कर्ताभाव का मूल सूत्र एक हैः "मैं केंद्र हूँ।", जब तक यह केंद्र दृढ़ है, तब तक प्रमाद की संभावना बनी रहेगी।

7. पहचान की सूक्ष्म जाँच अपने जीवन के क्षेत्रों को देखें-कार्य परिवार संबंध नेतृत्व साधना हर क्षेत्र में स्वयं से पूछेंः क्या यहाँ मैं माध्यम हूँ? या मैं केंद्र हूँ? यह प्रश्न ही कर्ताभाव की परतें खोलना शुरू कर देता है।

8. माध्यम होने की अनुभूति जब व्यक्ति अनुभव करता है कि वह जीवन की धारा का एक अंग है, न कि उसका संचालक-तो भीतर हल्कापन आता है। कार्य रुकता नहीं। जिम्मेदारी समाप्त नहीं होती। पर बोझ कम हो जाता है। कर्ताभाव से माध्यम भाव की ओर यह संक्रमण ही आंतरिक स्वतंत्रता की शुरुआत है।

9. अंतिम स्पष्टता कर्ताभाव कई रूपों में आता है। जब तक उसकी सूक्ष्म परतें न देखी जाएँ, वह छिपा रहता है। सांसारिक, पारिवारिक, सामाजिक, आध्यात्मिक-हर स्तर पर उसे पहचानना आवश्यक है। जब पहचान स्पष्ट होती है, तो पकड़ ढीली होती है। और जहाँ पकड़ ढीली होती है, वहीं प्रमाद कम होने लगता है। अगले अध्याय में हम देखेंगे-जिम्मेदारी कैसे धीरे-धीरे बोझ में बदलती है।

❀❀❀

(क्रमशः)

रामनवमी पर्व पर विशेष...

श्रीराम और तीर्थंकर महावीर के मध्य वंश परंपरा का मधुर संबंध

- श्रमण डॉ पुष्पेन्द्र मुनि जी म.सा.

चैत्र महीने का सीधा संबंध महापुरुषों के जन्मों के साथ जुड़ा हुआ है। चैत्र माह की शुक्ल पक्ष की नवमी को मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्मोत्सव आता है तो जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म कल्याणक (जन्म जयंती) भी चैत्र महीने में ही शुक्ल की त्रयोदशी को मनाया जाता है। इन दो महान व्यक्तित्वों का जन्म चैत्र माह में ही सिर्फ 4 तिथियों के अंतर पर हुआ। हालांकि दोनों के जन्म में हजारों वर्षों का अंतर है। फिर भी दोनों के बीच एक मधुर, गहरा और अद्‌भुत संबंध है।

भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें और अंतिम तीर्थंकर हैं। इस महान परंपरा की तीर्थंकर परंपरा के प्रथमेश असि, मसि कृषि व अंक शब्दों के जनक प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ (ऋषभदेव) से हुआ, जो कि पहले तीर्थंकर थे। भगवान आदिनाथ अयोध्या के राजा नाभि के पुत्र के रूप में जन्मे। यानी अयोध्या न केवल श्रीराम की जन्मभूमि रही है, बल्कि जैन परंपरा में भी अत्यंत पवित्र स्थान है, क्योंकि यहाँ चार अन्य तीर्थंकरों का जन्म भी हुआ अजितनाथ (दूसरे), अभिनंदननाथ (चौथे), सुमतिनाथ (पाँचवें) और अनंतनाथ (14वें)।

संयोग से, भगवान आदिनाथ का जन्म भी चैत्र मास में ही हुआ था। हालांकि वह कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि थी। उन्होंने सूर्यवंश की इक्ष्वाकु परंपरा की स्थापना की, वही वंश जिसमें कई पीढ़ियों बाद भगवान श्रीराम का जन्म हुआ। इस सदी के चौबीस तीर्थंकरो में से तीन तीर्थंकरों, वासु पूज्य स्वामी, मुनि सुव्रतनाथ व नेमिनाथ तीर्थंकर को छोड़कर बाकी इक्कीस तीर्थंकर इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न हुए। इस प्रकार, भगवान महावीर की जैन परंपरा और भगवान श्रीराम की वंशावली दोनों की जड़ें भगवान आदिनाथ से जुड़ती हैं।

त्रिशष्टिशलाका पुरुषचरियं, पउम चरियं, पद्मपुराण साहित्यक ग्रंथों में मर्यादा पुरुषोत्तम राम का उल्लेख सम्मिलित है। चौथे आरे के बीसवें तीर्थंकर मुनि सुव्रत स्वामी के समय में श्रीराम का उल्लेख मिलता है। जैन साहित्य अनुसार श्रीराम को बलदेव माना गया है जो कि 63 श्लाघ्य पुरुष में आते हैं, तो एक दार्शनिक परंपरा है, दूसरी जैविक। यह संबंध केवल भूगोल, वंश और नामों तक सीमित नहीं है। यह गहराई तक विचार और मूल्य व्यवस्था में रचा-बसा है। चाहे तीर्थंकर हों या श्रीराम, सभी ने धर्म की भावना को जीवन का मूल बनाया। इक्ष्वाकु वंश का नाम ही 'इक्षु' अर्थात गन्ने से लिया गया है। सरयू नदी के तट पर बसे अयोध्यावासी गन्ने की खेती करते थे और उसका रस निकालना जानते थे। यह बात तब और स्पष्ट हो जाती है जब हम पाते हैं कि भगवान ऋषभदेव ने अपने पौत्र श्रेयांस कुमार के हाथों हस्तिनापुर शहर में अपने 400 दिवसीय उपवास को अक्षय तृतीया के दिन गन्ने के रस को स्वीकार कर उस कठिन तपस्या का पारणा संपन्न किया।

विस्तृत गहराई से अगर अध्ययन किया जाए तो दोनों महापुरुषों ने सत्य, धर्म व सात्विक जीवनशैली तथा पर पीड़ा नहीं पहुँचाने का प्रयास ही नहीं किया अपितु जनमानस को संदेश भी दिया। अनेक प्रकार से देखा और समझा जा सकता है कि मूलतः धर्म की आत्मा हमें यह सिखाती है कि मानव जीवन एक-दूसरे से गहराई से जुड़ा है। चाहे वो तीर्थंकर हों या मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम। धर्म वह स्वभाव है जो हर मानव के भीतर प्राकृतिक रूप से निहित है।

तीर्थंकर वर्धमान महावीर ने वर्तमान समय में व्यथित व कुंठित जनमानस को संदेश देते हुए कहा कि सर्वप्रथम मन पर नियंत्रण बनाना होगा। मन हमेशा दुःख देता है। मन की इच्छाएँ अनंत हैं, वह कभी भी पूर्ण नहीं होती हैं। अगर एक इच्छा पूरी होगी तो उसके साथ सौ नई इच्छाएँ शुरू हो जाएँगी। ऐसे में सभी इच्छाएँ पूरी होंगी, इसकी कल्पना भी संभव नहीं है। जैसे ही इच्छा अपूर्ण हुई, मन विचलित होगा और दुःख देगा। यही दुःख और दूसरी इच्छाओं के अपूर्ण होने पर बढ़ता जाएगा। एक समय यह आएगा कि अनंत इच्छाओं की अपूर्णता लिए मन दुःखों का अंबार उडेल देगा और पूरा जीवन दुःखों के भंवर में उलझ जाएगा। बेहतर यही है कि मन पर नियंत्रण बनाओ और उसके साथ जीवन की इच्छाओं पर भी। अगर हम यह करने में सफल रहे तो गृहस्थ में रहकर भी मुक्ति का मार्ग पकड़ लेंगे। हम अनंत इच्छाओं के समुद्र में रहकर भी शांत और सुखी रहेंगे। सुख कोई वस्तु नहीं है, यह केवल मन की अवस्था है। दुःख कोई वस्तु नहीं है, यह भी अवस्था है। अगर मन पर नियंत्रण होगा तो सुख और दुःख की अवस्था पर भी नियंत्रण होगा। अगर मन नियंत्रित होगा तो इच्छाओं पर नियंत्रण होगा और जब इच्छाएँ नियंत्रण में आ जाएँगी, जीवन प्रसन्नता से भर जाएगा और जीव आनंद की अनुभूति करेगा।

जीवन में मुक्ति क्या है? : आनंद ही तो है। जब आनंद की अवस्था मिल गई तो समझ लो जीवन से मुक्ति मिल गई। उस अवस्था को पाने का प्रयास ही मुक्ति का मार्ग है। यही मुक्ति का मार्ग तीर्थंकर वर्धमान ने व मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने स्वीकार किया तभी वर्षों उपरांत भी उनके कथन सदैव जीवन में नया संदेश देते हैं।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक के संदर्भ में श्रमण संघीय युवाचार्य प्रवर परम पूज्य महेन्द्रऋषिजी म.सा. का संदेश

जब दुनिया अशांत हो, तब उत्सव नहीं महावीर के सिद्धांतों को जीना जरूरी है। वर्तमान समय के युद्ध और अशांति के बीच, भगवान महावीर स्वामी जन्म कल्याणक को सादगी और शांति से मनाते हुए, उनके उपदेशों और सिद्धांतों को जीवन में उतारना ही सच्ची श्रद्धा है। उत्सव में आडंबर, दिखावा और भव्यता के स्थान पर, विश्व शांति की प्रार्थना करते हुए संयम, करुणा, अहिंसा और आत्मचिंतन को महत्व दें। सच्चा उत्सव भीतर के परिवर्तन में है, बाहरी प्रदर्शन में नहीं। आइए, महावीर के सिद्धांतों को अपनाकर विश्व में शांति का संदेश फैलाएं। शांति, संयम और सादगी से ही यह पर्व वास्तव में मंगलमय बनेगा।

समाज का दर्पण : समय पर संस्कार और सगाई

- गौतमचंद ढुग्गड़ जैन, चेन्नई

गंभीर विषय है, चिंतन कर लो, समाज की घटती धारा है, जिनके घर में योग्य कुंवारे, उनका मन भी हारा है। पच्चीस तीस पार की बेटियाँ बैठी, बेटे चालीस छू रहे, रिश्तों की लम्बी फेहरिस्त में, हम अपनों को ही खो रहे। दोष कहाँ है? सोचो जरा। पूर्वज हमारे साख देखते, कुल और शील का नाता था, संस्कारों की पूँजी से ही, घर-आँगन महक जाता था। आज देखते बंगला-गाड़ी, बैंक का मोटा बैलेंस है, गुण और लक्षण गौण हो गए, स्टेटस ही बस चैलेंज है। पच्च-सै रिश्ते देख लिए पर, मन फिर भी नहीं भरता है, बेहतर की अंधी चाहत में, योग्य हाथ से फिसलता है।

पच्चीस साल की उम्र तक ही, बेटी का ब्याह रचाना है, समय का बंधन टूटे तो, फिर मुश्किल हाथ मिलाना है। सावधान समाज! परिणाम देखो... देर से होते ब्याह हमारे, जैनों की संख्या घट रही, रिश्ते टिकते नहीं आज कल, तलाक की फाइलें बढ़ रही। जब समाज में योग्य न मिलता, भटकाव वहाँ घर करता है, अंतरजातीय शादियों से, फिर कुल का गौरव मरता है। अपना स्तर भी देख परख लो, केवल धन को मान न दो, व्यवहार और कुल-मर्यादा को, गिर जाने का दान न दो। समय पे निपटा काम ही साजे, परिवार का संतुलन बना रहे, संस्कारों की नींव खड़ी हो, जैन समाज यूँ ही बना रहे।

निष्कर्ष : धन तो फिर भी आ जाएगा, पर खोया समय न आएगा, समय पे बेटी विदा करोगे, तो कुल का मान बढ़ जाएगा।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

खटीक समाज को अहिंसक बना कर 'वीरवाल जैन' उद्‌बोधन देने वाले स्थानकवासी जैन संत श्री समीरमुनि जी म.

– प्रोफेसर (डॉ.) आंचल जैन

राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र का कसाई खटीक समाज जिनकी सुबह पशुओं पर छूरी चलाने से होती थी। छोटे गाँवो से पशु खरीदकर उन्हें कत्लखानों तक पहुँचाना ही इनका जीविका स्त्रोत रहा, ऐसे समाज का लाखों की संख्या में हृदय परिवर्तन कर उनका उद्धार समीरमुनि ने किया। तीर्थंकरों के संदेश "पापी से नहीं पाप से घृणा करो" को आत्मसात कर अबोध जीवों के प्रति क्रूर दलित खटीकों के बीच 1 मई 1958 से अहिंसा की दीपशिखा मुनिवर ने जगाई और उन्हे जीवहत्या के कलंक से मुक्त कर महावीर के उपासक "वीरवाल" नाम दिया। उन्हे दलितों से श्रेष्ठी बना दिया। अहिंसा का अंतर्नाद करने वाले समीरमुनि जी म. ने अपने जीवन का लक्ष्य ही खटीकोद्धार बना लिया था।

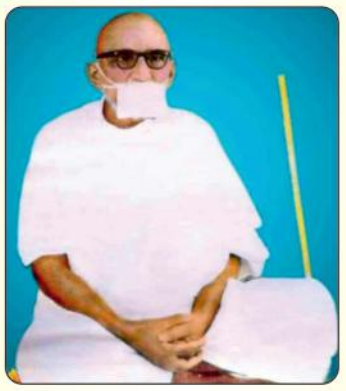

खटीकों की दिनचर्या में पशुओं का कत्ल कर माँस बेचना और शाम को उन पैसों से शराब पी जाना, महिलाओं को मारना यही सब सम्मिलित था। समीरमुनि जी म. ने उन्हे महावीर की दया, करुणा सिखाई उसी का परिणाम रहा कि आज 1 लाख खटीक समाज के लोग क्रूरतम व्यापार छोड़कर सात्विक व्यापार अपना चुके हैं।

जब समीरमुनि जी म. ने खटीक समाज को अहिंसा से जोड़ना आरंभ किया, तब तत्कालीन राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने चित्तौड़गढ़ में 20 एकड़ जमीन प्रदान की एवं दिनांक 3 अप्रैल 1966 को स्वयं पधारकर चित्तौड़ में 'अहिंसा नगर' की आधारशिला रखकर स्थापना की। श्री समीरमुनि जी महाराज के इस अहिंसक अभियान के कल्याणकारी परिणाम को देखकर जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंदऋषि जी महाराज ने भी अपना संपूर्ण आशीर्वाद एवं समर्थन दिया। कालांतर में आचार्य पूज्य श्री देवेंद्रमुनि जी महाराज एवं वर्तमान आचार्य पूज्य डॉ. शिवमुनि जी महाराज का भी इस अहिंसक जागरूकता अभियान को पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त है।

मध्यप्रदेश-राजस्थान के नीमच, मंदसौर, चित्तौड़, निम्बाहेड़ा, उदयपुर, छोटी सादड़ी क्षेत्र में वीरवाल जैनों का प्रवास है। यहाँ यह व्यापार में ओसवाल, अग्रवाल जैसे सम्पन्न समाज के लोगों के साथ कर अहिंसक व्यापार कर रहे है। वीरवाल समाज से सूरत, पुणे, अहमदाबाद जैसे शहरों में बड़े व्यापारी है। गाँवो में वीरवाल समाज कृषि से जुड़ा है।

सामाजिक परिवर्तन की दिशा में शिक्षा भी बड़ी अच्छी स्थिति में शीर्ष तक पहुँच चुकी है, JEE- मैन्स 2017 में टॉप करने वाले उदयपुर निवासी कल्पित वीरवाल इसी समाज की विभूति है। पूज्य श्री समीरमुनि जी म. ने इस समाज में अहिंसा का संदेश प्रदान करने के लिए स्थानकवासी परंपरा के साधु-साध्वियों को इन क्षेत्रों में विचरण करने की प्रेरणा दी, जिससे खटीक समाज का हृदय परिवर्तन हुआ। वीरवाल समाज आज चैरिटी के कई कार्य कर रही है, जैनों ने भी इनके उत्थान में हरसंभव सहयोग किया इनके साथ रोटी-बेटी का संबंध जोड़ा और इनको सदैव अपने बराबर रखा।

आज भी अछूत खटीकों के बीच वीरवाल समाज की संस्थाएँ अहिंसा का प्रचार करती है। उन्हे शराब, माँस और रात्रि भोजन न करने का नियम दिलाकर जैन धर्म में सम्मिलित किया जाता है। यह सब कार्य श्री समीरमुनि जी म. के प्रयास से हो पाया। हिंसक कार्यों को त्याग कर यह समाज पूर्ण रूप से स्थानकवासी जैन धर्म के सामायिक, तपस्या और व्रत-नियमों का पालन करते हैं। परिवर्तन के बाद इस समाज को 'वीरवाल' समाज के रूप में जाना जाने लगा, जो अब एक शिक्षित और प्रतिष्ठित समुदाय है।

श्री समीरमुनि जी महाराज की प्रेरणा से उनकी शिष्या स्वर्गीय कमला माताजी की भूमिका भी इस पूरे अभियान में प्रेरणादायक रही। कालांतर में श्रमण संघ के महामंत्री पूज्य श्री सौभाग्यमुनि जी महाराज 'कुमुद' ने भी मेवाड़ क्षेत्र के खटीक समाज से आबाद क्षेत्र में विचरण एवं प्रेरित करके वीरवाल अभियान को जारी रखा जो की निरंतर आज भी सांगठनिक रूप से संचालित हो रहा है।

वीरवाल समाज हमें यह प्रेरणा देता है कि कितना ही क्रूरतम इंसान क्यों न हो अहिंसा से उसका हृदय परिवर्तन संभव है। दलितों का हित किसी को कोसने से नहीं होगा मेहनत पुरुषार्थ के बल पर अहिंसा अपनाकर हम अपना और अपने समाज का कल्याण कर सकते है।

आध्यात्मिक जीवन में सबसे बड़ा सम्मान आत्मबोध है न कि सरकारी पुरस्कार

बिजापुर (कर्नाटक) : बिजापुर के आध्यात्मिक गुरु सिद्धेश्वर स्वामी को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया था, लेकिन स्वामी जी ने उस पुरस्कार को वापस कर दिया। स्वामी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर कहा कि वे अब एक संन्यासी (साधु) जीवन अपना चुके हैं। उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा कि एक संन्यासी और आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में पुरस्कार उनके लिए कोई विशेष मायने नहीं रखता क्योंकि उनका जीवन-धर्म आध्यात्मिक साधना पर केंद्रित है।

संन्यास जीवन का अर्थ है-सम्मान, पद, पुरस्कार और सांसारिक पहचान से ऊपर उठकर केवल आत्म-साधना के मार्ग पर अग्रसर होना। जब व्यक्ति संन्यास ग्रहण कर लेता है, तब बाहरी सम्मान उसके लिए न तो आवश्यक रहते हैं और न ही अर्थपूर्ण। इसलिए उन्होंने किसी असंतोष या विरोध के भाव से नहीं, बल्कि पूर्ण सम्मान और श्रद्धा के साथ यह पुरस्कार लौटाने का निर्णय लिया। आध्यात्मिक जीवन में सबसे बड़ा सम्मान आत्मशांति, वैराग्य और आत्मबोध है न कि सरकारी या सामाजिक पुरस्कार।

प्रेषक : सुधीर हरबंस लाल जैन, कोटा

कष्ट निवारण हेतु विशिष्ट साधना है : नवपद ओली

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा यानि एकम् को नव संवत्सर के प्रारंभ होने के साथ ही मानो त्यौहारों, पर्वों, विशेष दिवसों, तीर्थंकर कल्याणकों एवं तपस्याओं आदि की एक झड़ी-सी लग जाती है। विक्रमी संवत्सर की शुरुआत प्रारंभ होने के साथ ही भारत के कई राज्यों में अलग-अलग नामों से नए संवत्, साल, वत्सर, वर्ष, संवत्सर आदि कुछ भी कह लो अलग-अलग नामों से शुरू होते हैं। जैसे गुड़ी पाड़वा, उगादी, युगादि आदि। विक्रमी सम्वत् 2083 के साथ ही शक संवत् 1948, युधिष्ठिर 5164 और कलियुग संवत् का प्रारंभ भी इसी दिन होता है। इस दिन को ही ब्रह्मांड का जन्मदिन भी कहते हैं क्योंकि इसी दिन सतयुग की शुरुआत हुई थी। विक्रमी संवत् को रौद्र संवत्सर भी कहा जाता है। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को ही चैत्र नवरात्रे शुरु होते हैं। नौवीं तिथि को रामनवमी तथा पूर्णिमा को हनुमान जयंती मनाई जाती है।

अब हम जैन धर्म की बात करें तो चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक आठ तीर्थंकरों के नौ कल्याणक आते हैं जिनमें पाँचवें तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ भगवान के दो कल्याणक, मोक्ष व तप कल्याणक आते हैं। चैत्र शुक्ला तेरस या त्रयोदशी को भगवान महावीर स्वामी जी का जन्म कल्याणक या जयंती विशेष उत्साह, उमंग, श्रद्धा-भक्ति व हर्षोल्लास के साथ पूरे भारत ही नहीं अपितु जहाँ भी जैन धर्मावलंबी हैं, मनाई जाती है। चैत्र शुक्ला सप्तमी से पूर्णिमा तक नवपद ओली की आराधना अतीव श्रद्धा के साथ आयंबिल की तपस्या करके मनाई जाती है। आश्विन शुक्ला सप्तमी से पूर्णिमा तक भी नवपद ओली की आराधना की जाती है। इस प्रकार, साल में दो बार, चैत्र और आश्विन महीनों में यह आराधना की जाती है। ओली तप में आयंबिल की तपस्या करते हुए प्रतिदिन एक-एक पद की आराधना की जाती है। इस आराधना में अलग-अलग दिन अलग अनाज का सेवन करके आयंबिल किए जाते हैं। पहले दिन 'नमो अरिहंताणं' की 12 माला करके सफेद चावल के साथ आयंबिल किया जाता है, कई लोग तो सफेद मोतियों की माला से ही जाप करते हैं। दूसरे दिन, 'नमो सिद्धाणं' की आठ माला का जाप और लाल अनाज यानी गेहूँ से आयंबिल किया जाता है। तीसरे दिन, 'नमो आयरियाणं' की 36 माला तथा पीले अनाज यानि चने से आयंबिल किया जाता है। अगले दिन 'नमो उवज्झायाणं' की 25 माला तथा हरे रंग के अनाज यानी मूँग का सेवन करके आयंबिल किया जाता है। पाँचवें दिन, 'नमो लोए सव्व साहूणं' की सत्ताईस माला, काले उड़द का आयंबिल किया जाता है। अगले चार पदों दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप में सफेद चावलों का आयंबिल किया जाता है। नमो दंसणस्स की 67 नाणस्स की 51, नमो चरितस्स की 70 और नमो तवस्स की 50 मालाएँ जपी जाती हैं। इस प्रकार नवपद ओली की आराधना चैत्र शुक्ल पूर्णिमा से अगले दिन सम्पूर्ण हो जाती है।

मुक्ति मार्ग के प्रत्येक साधक के लिए नवपद ओली आराधना अनिवार्य कही गई है। आत्मा से परमात्मा बनने की राह में देव-गुरु-धर्म की आराधना की जाती है। नवपद की आराधना में पंच परमेष्ठी के साथ-साथ उनके गुणों की भी आराधना की जाती है। धर्मग्रंथों में श्रीपाल व मैना सुंदरी का जीवन चरित्र नवपद ओली आराधना का सर्वप्रमुख उदाहरण है। श्रीपाल और मैना सुंदरी ने नवपद की आराधना की थी। श्रीपाल का कोढ़ दूर हो गया था। उनकी जप व तपाराधना से अभिमंत्रित जल से 500 अन्य कोढ़ियों का कोढ़ भी क्षय हो गया था। नवपद ओली की इस महान तपस्या व आराधना से शरीर तो क्या भव-भव के कर्मबंधनों का क्षय भी हो सकता है।

नवपद ओली की आराधना श्रावकों को भक्ति की गहराई में ले जाने वाली है, उनका आध्यात्मिक ऊर्ध्वारोहण करने में सहायक है। हम सभी को भव-भयहारिणी नवपद ओली की आराधना करके अपने कर्मों का क्षय करते हुए मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर होना चाहिए। नवपद ओली के निमित्त दो पंक्तियाँ:

नवपद ओली की आराधना, जो श्रद्धा-भक्ति में डूबकर करते हैं।
खुशियों से अपनी झोलियाँ वे भरते हैं।
कर्मों के बंधन काटकर वे, 'संजीव' भवसागर से वे तर जाते हैं।।

– संजीव जैन, करनाल (हरियाणा)

J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन अभय जैन | महामंत्री अतुल जैन | कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जैन समाज की घटती जनसंख्या : आत्मचिंतन का समय

– सुगालचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

(गतांक से आगे)

यह भी एक कटु सच्चाई है कि कई बार इस स्थिति के पीछे सबसे बड़ी भूमिका स्वयं माता-पिता की होती है। वही पिता जिसने स्वयं 22 या 25 वर्ष की आयु में विवाह कर परिवार बसाया, वह आज अपनी बेटी को 30 वर्ष तक राजकुमारी की तरह घर में बैठाए रखना चाहता है। कभी नौकरी के नाम पर, कभी बेहतर वर की प्रतीक्षा में, कभी प्रतिष्ठा और अपेक्षाओं के कारण विवाह टलता जाता है। परिणाम यह होता है कि कई युवतियाँ मानसिक तनाव, चिकित्सा संबंधी कठिनाइयों या असफल वैवाहिक जीवन का सामना करती हैं। इस प्रक्रिया में धीरे-धीरे पूरा समाज बिखरने लगता है।

आज आवश्यकता है कि हम इस विषय को भावनात्मक विवाद का मुद्दा न बनाकर गंभीर सामाजिक चिंतन का विषय बनाएं। यदि हम समय रहते नहीं जागे तो आने वाले वर्षों में हमारी नई पीढ़ी का आकार और छोटा होता जाएगा और समाज की सामूहिक शक्ति भी कमजोर होती जाएगी। यह केवल संख्या का प्रश्न नहीं है, यह हमारी संस्कृति, परंपरा और सामूहिक भविष्य का प्रश्न भी है।

आज जैन समाज के सामने जो स्थिति बन रही है, वह केवल संयोग नहीं है बल्कि हमारी जीवनशैली और सामाजिक सोच का परिणाम है। यदि हम वर्तमान स्थिति का शांत मन से विश्लेषण करें तो कुछ चिंताजनक तथ्य सामने आते हैं। औसतन पुरुषों की विवाह आयु लगभग तीस वर्ष के आस-पास पहुँच रही है और महिलाओं की लगभग सत्ताईस वर्ष के आस-पास। अधिकतर दंपति एक या दो बच्चों तक ही सीमित हो जाते हैं। कई परिवार ऐसे भी हैं जहाँ संतान नहीं हो पाती या चिकित्सा समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन सब परिस्थितियों के कारण समाज की जनसंख्या का संतुलन धीरे-धीरे कमजोर होता जा रहा है।

सबसे अधिक चिंता की बात यह है कि समाज के बुद्धिजीवी वर्ग में भी इस विषय पर गंभीर चर्चा बहुत कम दिखाई देती है। विवाह, परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी को कई बार बोझ की तरह देखा जाने लगा है। कुछ लोग इसे आधुनिक जीवनशैली का हिस्सा मानते हैं और कुछ इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का विषय मानकर चुप रहना ही उचित समझते हैं। लेकिन यह समझना आवश्यक है कि विवाह केवल सामाजिक व्यवस्था नहीं है, यह परिवार और संस्कृति को आगे बढ़ाने की एक महत्वपूर्ण कड़ी भी है।

हमारे पूर्वजों ने सदियों तक परिवार, परंपरा और समाज की रक्षा की है। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी अपने मूल्यों को बचाए रखा। यदि आज हम केवल सुविधा और व्यक्तिगत जीवनशैली के कारण इन मूल्यों को कमजोर होने दें तो यह आने वाली पीढ़ियों के प्रति अन्याय होगा। समाज केवल मंदिरों, संस्थाओं या भवनों से नहीं बनता, समाज जीवंत परिवारों और नई पीढ़ियों से बनता है।

यह भी समझना आवश्यक है कि बेटियों को राजकुमारी की तरह पालना गलत नहीं है, लेकिन यदि उसी कारण उनका जीवन निर्णय लगातार टलता जाए तो यह उनके भविष्य के लिए भी उचित नहीं है। समय पर विवाह, संतुलित परिवार और परस्पर समझदारी से भरा वैवाहिक जीवन ही स्थिर समाज की आधारशिला बनता है।

आज आवश्यकता है कि समाज के नेता, चिंतक, विद्वान और साधु-संत भी इस विषय पर खुलकर संवाद करें। परिवारों में भी इस विषय पर सकारात्मक चर्चा होनी चाहिए। विवाह को अनावश्यक रूप से टालने के बजाय जीवन के स्वाभाविक क्रम के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। संतुलित परिवार और बच्चों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण समाज को स्थिरता प्रदान कर सकता है।

यह भी उतना ही आवश्यक है कि हम युवाओं पर केवल दबाव न डालें बल्कि उन्हें जिम्मेदारी और संतुलित जीवन का महत्व समझाएँ। विवाह केवल सामाजिक औपचारिकता नहीं बल्कि साझेदारी, सहयोग और भविष्य निर्माण का माध्यम है। जब परिवार मजबूत होंगे तभी समाज भी मजबूत रहेगा।

अंततः यह विषय किसी एक व्यक्ति या परिवार का नहीं बल्कि पूरे समाज के सामूहिक भविष्य का विषय है। यदि हम आज जागरूक होकर संतुलित निर्णय लें तो आने वाली पीढ़ियाँ एक स्वस्थ, जीवंत और संगठित समाज का अनुभव कर सकेंगी। लेकिन यदि हम केवल मौन रहकर समय को यूँ ही गुजरने दें तो भविष्य में हमारी पहचान कमजोर पड़ सकती है।

समय की यही पुकार है कि हम चिंतन करें, संवाद करें और समाज के भविष्य के प्रति जिम्मेदारी का भाव जगाएँ। क्योंकि जब परिवार जीवित रहते हैं तभी संस्कृति जीवित रहती है और जब नई पीढ़ियाँ आगे बढ़ती हैं तभी समाज का अस्तित्व सुरक्षित रहता है।

आचार्य सम्राट् पू. डॉ. शिवमुनि जी म.सा. एवं गच्छाधिपति आचार्य श्री राजयशसूरीश्वर जी म. का मंगल मिलन

सूरत (गुजरात) : जन-जन की आस्था के केन्द्र ध्यान योगी आचार्य सम्राट पूज्य श्री डॉ. शिवमुनि म.सा., प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनि म.सा. आदि ठाणा-10 सुखसातापूर्वक आत्म - भवन अवध संगरीला में विराजमान हैं। आचार्य भगवन् की चार माह की अखण्ड मौन ध्यान-साधना गतिमान है।

महासाध्वी पू. श्री संयमप्रभा म.सा. आदि ठाणा-3 अवध संगरीला पधारे। महासाध्वी पू. श्री वीरकान्ता म.सा. के सान्निध्य में अध्ययनरत मुमुक्षु रजनीबाला जैन भी उपस्थित हुई। आचार्य भगवन ने मुमुक्षु की उत्कृष्ट भावना को देखते हुए दीक्षा की आज्ञा प्रदान की साथ ही अपना शुभ मंगल आशीर्वाद भी प्रदान किया। इस अवसर पर अवध महिला मण्डल ने कुंकुम तिलक लगाकर एवं माला, शॉल द्वारा मुमुक्षु बहन का स्वागत - अभिनन्दन किया।

तीर्थ धाम के प्रेरणाश्रोत गच्छाधिपति आचार्य श्री राजयशसूरीश्वर म.सा. के सुशिष्य आचार्य श्री वीतरागयष विजय म.सा. आदि ठाणा-4 का आत्म-भवन में पधारना हुआ। ध्यान के साथ-साथ अनेक विषयों पर चर्चा विमर्श हुआ। सन् 1993 में उन्होंने मैलापुर, चैन्नई में वैराग्यकाल अवस्था में आचार्य भगवन के दर्शन किये थे। आचार्य भगवन् ने अपना ध्यान साहित्य भेंट कर सम्मान प्रकट किया। आचार्य भगवन के मंगल आशीर्वाद एवं दर्शन हेतु आई.ए.एस. श्री स्मित लोढ़ा व उनकी धर्मपत्नी आई. पी.एस. विशाखा जैन सपरिवार उपस्थित हुए। आचार्य सम्राट पूज्य श्री डॉ. शिवमुनि म.सा. एवं गच्छाधिपति आचार्य श्री अभयदेवसूरी म.सा. का मंगल मिलन अवध संगरीला के आत्म भवन के प्रांगण में हुआ। दोनों ही आचार्य भगवन का यह मिलन नयनाभिराम था। समग्र जैन समाज की सम्वत्सरी एक हो इस विषय पर गहनता के साथ वार्ता हुई। 45 से 50 मिनट दोनों गुरु भगवंतों की चर्चा हुई। उसके पश्चात् गच्छाधिपति आचार्य श्री अभयदेवसूरी लब्धी धाम पधारे। आचार्यश्री की साधना दिनांक 17 अप्रैल 2026 तक गतिमान रहेगी तत्पश्चात् दिनांक 20 अप्रैल 2026 को अक्षय तृतीया वर्षीतप पारणा महोत्सव का आयोजन शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन के तत्वावधान में लब्धि पार्श्वनाथ तीर्थ धाम में संभावित है।

गुरुणी यशकंवरजी की जयंती पर भव्य स्नेह मिलन एवं तपस्वियों का सम्मान

भीलवाड़ा (राजस्थान) : दिनांक 24 मार्च मंगलवार को कोटा रोड़ स्थित यश विहार में यश प्रोत्साहन महिला मंडल द्वारा होली स्नेह मिलन कार्यक्रम श्रद्धा एवं स्नेह के वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुणी यशकंवर महाराज की जन्म जयंती मनाते हुए उनके गुणों का सामूहिक गुणगान किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंडल अध्यक्षा श्रीमती रेखा नानेचा जैन, कार्याध्यक्षा श्रीमती नीता बाबेल जैन, मंत्री श्रीमती राखी खमेसरा जैन एवं श्रीमती मैना बाफना जैन के नेतृत्व में महामंत्र नवकार एवं यश चालीसा के सामूहिक पाठ से हुई।

कार्याध्यक्षा श्रीमती नीता बाबेल जैन ने बताया कि ऐसे आयोजन महिलाओं में आपसी जुड़ाव, सांस्कृतिक मूल्यों और धार्मिक चेतना को सुदृढ़ करने का माध्यम हैं।

इस दौरान वर्षीतप कर रही तपस्वी बहन श्रीमती लाड़ मेहता जैन एवं श्रीमती मैना बाफना जैन का सम्मान करते हुए उनके वर्षीतप की अनुमोदना की गई तथा तपस्या के महत्व पर प्रकाश डाला गया। अंत में महिलाओं ने भक्ति गीतों पर सामूहिक नृत्य प्रस्तुत कर उत्साह और सौहार्द का परिचय दिया। कार्यक्रम ने समाज में एकता और सकारात्मकता का संदेश दिया।

प्रेषक : सुनील चपलोत जैन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

निराश्रित जैन साधर्मिक श्रावक-श्राविकाओं के लिए निःशुल्क जीवन यापन एवं साधना की व्यवस्था

आपके ध्यान में कोई स्वस्थ जैन साधर्मिक श्रावक-श्राविका अकेले जिंदगी जी रहे हों या जिनके आगे-पीछे कोई सार संभाल करने वाले कोई नहीं, उनके लिए निःशुल्क तीर्थ में भोजन एवं रहने के लिए व्यवस्था हो जायेगी। श्रमण संघीय सलाहकार उप-प्रवर्तक पू. श्री तारकऋषि म. की कृपा से स्थापित जय नवकार तीर्थ नागपुर-मुंबई हाईवे, पूरणगांव रोड वैजापूर जिला छः संभाजी नगर (महाराष्ट्र) (शिर्डी एवं कोपरगांव से 30 km) में स्थित है। यहाँ पर रहने के लिए प्राकृतिक वातावरण में कमरे, महामंत्र नवकार साधना कक्ष, साधकाश्रम, गऊशाला एवं भोजनशाला, स्थानक भवन, अतिथि भवन युक्त पूर्ण व्यवस्था है।

सूचना : दैनिक महामंत्र नवकार की साधना करना अनिवार्य है।

सम्पर्क सूत्र : 92704 95693, 82874 52345

कविता — पेड़ लगाओ

– प्रणत धींग जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

छोटे-छोटे बीज उगाओ, घर में पेड़ लगाओ।
जगह-जगह पर पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ।
फूल खिलेंगे, फल लगेंगे, छोटे-छोटे जीव पलेंगे।
बनी रहेगी जैव विविधता, जीव मात्र से प्रेम जगाओ।
पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ, कार्बन डाईऑक्साइड लेता।
बदले में ऑक्सीजन देता, पर्यावरण के इस प्रहरी को,
न तो कोटो, न कटावाओ, पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ।
शीतल छांव हवा चलती, एसी, कूलर कम चलाओ।
अपना बिजली खर्च बचाओ, डाली पर कोयल आएगी,
बोली मीठी मन भाएगी, तोता, मैना, गौरैया को भी,
अपने घर आंगन में बुलाओ, पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ।

श्रमण संघीय जैन पर्व

दिनांक 2 अप्रैल : चैत्र आयम्बिल ओली समापन
दिनांक 5 अप्रैल : मालव केसरी श्री सौभाग्यमल जी म.-दीक्षा जयन्ती
दिनांक 9 अप्रैल : उपाध्याय श्री हेमचंद जी म.-स्मृति दिवस

आध्यात्मिक एवं विशेष दिवस

दिनांक 2 अप्रैल : हनुमान जयन्ती
दिनांक 14 अप्रैल : बैसाखी, अम्बेडकर जयन्ती

जैनत्व सनातन संस्कृति महोत्सव

जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा से की मुलाकात

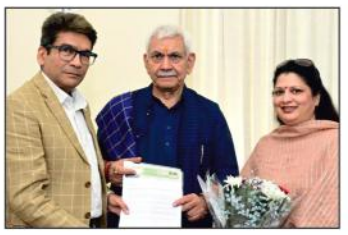

जम्मू : जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री श्री संदीप जैन 'सन्नी' के नेतृत्व में महिला शाखा की सदस्या मोनिका जैन सहित प्रतिनिधिमंडल ने जैन समुदाय से संबंधित दो महत्वपूर्ण पहलों के संबंध में जम्मू-कश्मीर के माननीय उपराज्यपाल मनोज सिन्हा को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने माननीय उपराज्यपाल से अनुरोध किया है कि वे केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय को जैन धर्म के दार्शनिक विरासत और अहिंसा, करुणा, नैतिक जीवन और सामाजिक सद्भाव जैसे साझा सभ्यतागत मूल्यों को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम "जैनत्व-सनातन संस्कृति महोत्सव" के आयोजन के लिए एक प्रस्ताव की सिफारिश करें। एक अलग ज्ञापन में उन्होंने माननीय उपराज्यपाल से यह भी अनुरोध किया कि वे महावीर जयंती (31 मार्च) के अवसर पर जम्मू जिले के सभी सरकारी और निजी स्कूलों को बंद रखने के लिए संबंधित अधिकारियों को उचित निर्देश जारी करें।

उधना में छः दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन

उधना (गुजरात) : महावीर इंटरनेशनल वीरा अभिलाषा, श्री ऑल इंडिया स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात महिला शाखा एवं उधना स्थानकवासी संघ के संयुक्त तत्वावधान में छः दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन महावीर भवन में 22 मार्च से 27 मार्च तक आयोजित किया गया। शिविर का मुख्य उद्देश्य समाज के अधिक से अधिक लोगों को प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से लाभान्वित करना तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में सूरत के डिप्टी मेयर श्री नरेंद्र पाटिल, श्री रतनजी भलावत (भाजपा उपाध्यक्ष, सूरत शहर) एवं उधना संघ के अध्यक्ष श्री कैलाश तांतेड की गरिमामयी उपस्थिति रही। साथ ही गवर्नर काउंसलिंग एवं जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महिला चेयरमैन डॉ. अनामिका तलेशरा जैन सहित अनेक गणमान्य अतिथियों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का संचालन सेक्रेटरी श्रीमती कविता दक द्वारा सुव्यवस्थित एवं प्रभावशाली ढंग से किया गया।

महासाध्वी श्री आदर्शज्योति जी म. का चेन्नई प्रवास

चेन्नई (तमिलनाडु) : आचार्य सम्राट पू. श्री आनन्दऋषि म. सा. की शिष्या पू. डॉ. आदर्शज्योती म.सा. आदि ठाणा का चेन्नई शहर की ओर विहार जारी है, आपके आगामी कार्यक्रम 31 मार्च महावीर जयंती आरकोणम, चेन्नई नगर प्रवेश 5 अप्रैल पटाभीराम श्रीसंघ से व अक्षया तृतीया पारणे कार्यक्रम 20 अप्रैल ए.एम.के. एम. पुरुषवाककम में होंगे। विहार सेवा में निरंतर स्थानीय श्रीसंघ द्वारा सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा द्वारा सेवा कार्य

उदयपुर (राजस्थान) : जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा ने भगवान महावीर के 2625वें जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर प्रभु महावीर के संदेश करुणा, सेवा और अहिंसा को किया आत्मसात। श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा की ओर से सेवा कार्य किए गये।

दिनांक 25 मार्च 2026 को प्रताप गौरव केंद्र के पास स्थित कच्ची बस्ती में जरूरतमंद लोगों के बीच भोजन के पैकेट वितरित किए गए। इस सेवा कार्य के अंतर्गत 100 से भी अधिक परिवार व बच्चों को भोजन करवाकर अपार खुशी और संतोष का अनुभव किया गया।

इस अवसर पर प्रांतीय महिला अध्यक्षा डॉ. पुष्पा खोखावत जैन एवं प्रांतीय महिला महामंत्री डॉ. शिल्पा नाहर जैन के साथ आत्म-ध्यान योजना उपाध्यक्षा श्रीमती सुनीता सामर जैन, सह-कोषाध्यक्षा श्रीमती रेखा चोरड़िया जैन, महिला मंत्री श्रीमती कुसुम डांगी जैन, श्रीमती सोनिका चोरड़िया जैन एवं अल्पसंख्यक योजना अध्यक्षा श्रीमती अनिता भंडारी जैन आदि उपस्थित रहीं और सभी ने सेवा कार्य में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। भगवान महावीर के करुणा, सेवा और अहिंसा के संदेश को आत्मसात करते हुए यह सेवा कार्य किया गया।

प्रेषक : पुष्पा खोखावत जैन

तेलंगाना महिला शाखा ने गुरु गणेश धाम में दर्शन एवं सामायिक का लिया लाभ

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की तेलंगाना महिला शाखा की सदस्याओं ने भोनगीर स्थित गुरु गणेश धाम में दर्शन एवं सामायिक का लाभ लिया। साथ ही आचार्य सम्राट् पू. डॉ. शिवमुनि म.सा. की सांसारिक बहन महासती पू. श्री निर्मलाश्री म.सा. आदि ठाणा के दर्शन किए। इस अवसर पर अध्यक्षा चंद्रकला कोठारी जैन, महामंत्री ममता बोहरा जैन, राजुल सिसोदिया जैन, शशि कोचेटा जैन, संपतबाई कोठारी जेन, लीला कामदार जैन, शोभा छाजेड़ जैन, लीला मुणोत जैन, प्रेमलता मुणोत जैन, शोभा छाजेड़ जैन आदि अन्य उपस्थित थी।

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा

भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की

स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा

बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड
प्रेस्टीज फीड मिल्स
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स
स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप
30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश
PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U (C)
Date of Publication : 28-03-2026
Date of Posting : 07/08-04-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com
भाषा : हिन्दी ✲ वर्ष : 70 ✲ अंक : 5
पृष्ठ : 8 ✲ माह : अप्रैल ✲ सप्ताह : 01 से 07
मूल्य : ₹ 10
सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

लाहौर एस.एस. जैन हॉल, जैन स्थानक का भव्य चार मंजिला भवन

पाकिस्तान में स्थानकवासी जैन परंपरा की भूली-बिसरी विरासतें...

आजादी से पूर्व पंजाब के लाहौर नगर में ऐतिहासिक लाहौरी गेट क्षेत्र के तहसील बाजार में एस.एस. जैन हॉल, जैन स्थानक की आधारशिला सन् 1940 में श्रीमती सुखदेवी जैन द्वारा रखी गई थी। उस समय लाहौर की कुल जनसंख्या 6,71,659 थी, जिसमें मुस्लिम बहुसंख्यक (64.50%) थे, जबकि हिंदू, सिख, ईसाई और अन्य अल्पसंख्यक समुदाय शेष 36% हिस्सा थे। जैन स्थानक में इस प्रवचन हॉल की छत लगभग 20 फीट ऊँची है। इसकी पिछली दीवार के बीच में जैन धर्म का स्वास्तिक निर्वाण चिन्ह इत्यादि प्रतीक लकड़ी की नक्काशी में बना हुआ है, जो आज भी मौजूद है।

अपने स्वर्णिम काल में, यहाँ स्थानकवासी जैन साधु-साध्वियों के चातुर्मास, विचरण के दौरान प्रवास, प्रवचन सभाएं आदि धार्मिक गतिविधियाँ स्थानकवासी जैन समाज द्वारा संपन्न होती थी। एक मंडप भी था, जिसका उपयोग विवाह समारोहों के लिए किया जाता था। इसकी दीवारों पर हिंदी में शिलान्यास उद्घाटन एवं दानदाताओं के शिलालेख आज भी मौजूद हैं।

दुर्भाग्य से, आज यह स्थानक भवन बेहद जर्जर स्थिति में है परंतु इसकी मूल संरचना आज भी जीवंत है। इसके ग्राउंड फ्लोर को अब आवासीय घरों में बदल दिया गया है। अपनी खस्ता हालत के बावजूद, यह हॉल लाहौर में जैन समुदाय की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मौजूदगी का एक महत्वपूर्ण गवाह है। जैन हेरीटेज फाऊंडेशन के द्वारा किए गए निरंतर प्रयासों से पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट के द्वारा दिए गए आदेश के मुताबिक पाकिस्तान पुरातत्व विभाग ने लाहौर के इस प्राचीन स्थानक को भी संरक्षित करने के लिए धनराशि आवंटित की है। शीघ्र ही लाहौर के इस स्थानक का रेस्टोरेशन का कार्य किया जाएगा और मेरे प्रस्ताव पर यहाँ पर पूर्व की भांति पंजाब स्थानकवासी परंपरा की महान आचार्य परंपरा तथा नवकार महामंत्र इत्यादि के चित्र भी स्थापित किए जाएंगे। जो की अत्यंत गौरवशाली एवं इतिहास संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य होगा।

प्रस्तुति - डॉ. अमितराय जैन

(क्रमशः)

जैन गौरव

अमर शहीद फकीरचन्द जैन

भारत वर्ष के स्वातंत्र समर में हजारों निरपराध मारे गये, आखिर अपनी आजादी की माँग करना कोई अपराध तो नहीं है। ऐसे ही निरपराधियों में थे 13 वर्षीय अमर शहीद फकीरचन्द जैन। फकीरचन्द अमर शहीद लाला हुकमचन्द के भतीजे थे। स्वातंत्र समर में इनकी बडी महत्वपूर्ण भूमिका रही। लालाजी हांसी के कानूनगो थे, बहादुर शाह जफर से उनकी गहरी मित्रता थी। सात वर्ष के बहादुर शाह के दरबारी थे। लालाजी ने मिर्जा मुनीर बेग के साथ एक पत्र बहादुर शाह जफर को लिखा, जिसमें अंग्रेज के प्रति घृणा और उनके विरुद्ध संघर्ष में पूर्ण सहायता का विश्वास बहादुर शाह जफर को दिलाया था। जब दिल्ली पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया तब बहादुर शाह जफर की फाइलों में यह पत्र अंग्रेजों के हाथ लग गया। तत्काल लालाजी को गिरफ्तार कर लिया साथ में उनके भतीजे को भी। 18 जनवरी 1858 को हिसार के मजिस्ट्रेट ने लालाजी व मिर्जा को फाँसी की सजा सुना दी। फकीरचन्द को मुक्त कर दिया। 19 जनवरी 1958 को लालाजी के मकान के सामने फाँसी दे दी गई। 13 वर्षीय फकीरचन्द इस दृश्य को भारी जनता के साथ खड़े-खड़े देख रहे थे, पर अचानक यह क्या हुआ? गौरा शाही ने बिना किसी अपराध के, बिना किसी वारंट के उन्हें पकड़ा और वहीं फाँसी पर लटका दिया। इस प्रकार अल्पवय में ही यह आजादी का दीवाना शहीद हो गया।

साध्वी श्री कुमुदलताजी म.सा. के सान्निध्य में पूज्य हुक्मीचंदजी म.सा. के छंद का जाप

भीलवाड़ा (राजस्थान) : महासाध्वी डॉ. कुमुदलता म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में अनुष्ठान आराधना में आचार्य हुक्मीचंद म.सा. के छंद का जाप कराया गया। चित्तौड़गढ़ राजमार्ग स्थित बीएसएल लि. मण्डपम में अनुष्ठान आराधना में महासाध्वी मण्डल ने पूज्य हुक्मीचंद म.सा. के छंद के जाप के माध्यम से उनके प्रेरणादायी जीवन गाथा एवं गुणों की महिमा की स्तुति कराई। भक्ति आराधना के इस संगम में शामिल होने के लिए भीलवाड़ा ही नहीं आस-पास के विभिन्न क्षेत्रों से श्राविकाएं पहुँचे और शुद्ध भावों के साथ इस छंद का जाप किया। अनुष्ठान के शुरू में महासाध्वी मण्डल के सान्निध्य में श्री व्रज पंज्जर स्तोत्र की आराधना की गई। महासाध्वी कुमुदलता म.सा. ने अनुष्ठान का लाभ प्राप्त करने वाले बीएसएल परिवार के प्रति हार्दिक मंगलभावनाएं व्यक्त की। अनुष्ठान में साध्वी महाप्रज्ञा म.सा., साध्वी पद्मकीर्ति म.सा., साध्वी राजकीर्ति म.सा. ने श्रद्धापूर्वक आराधना कराई।

सिविल जज जूनियर डिविजन परीक्षा में कृतिका जैन ने हासिल की 11वीं रैंक

जम्मू : अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर, एडवोकेट गगन ओसवाल की पत्नी कृतिका जैन को सिविल जज (जूनियर डिवीजन) परीक्षा में 11वीं रैंक हासिल करने की उनकी उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए सम्मानित किया गया। जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की ओर से श्री संदीप जैन 'सन्नी', मोनिका जैन, नीरव जैन आदि ने उन्हें सम्मानित किया और हार्दिक बधाई दी। जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा की ओर से उन्हें आशीर्वाद और शुभकामनाएं दी गई। इस अवसर पर श्री संदीप जैन 'सन्नी' ने कृतिका जैन को उनकी उपलब्धि पर बधाई दी और कहा कि उनकी सफलता समुदाय के लिए गर्व की बात है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि न्यायाधीश के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए वे हमेशा न्यायपूर्ण, निष्पक्ष और जैन दर्शन के महान सिद्धांतों से प्रेरित रहेंगी, जिससे सत्य, न्याय और करुणा के मूल्यों को कायम रखा जा सके।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की ज्ञान प्रकाश योजना के अंतर्गत प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का आयोजन

महावीर प्रश्नावली (भाग-1)

प्रश्न 1. : महावीर स्वामी कौन थे ?
प्रश्न 2. : महावीर स्वामी का जन्म कौन से काल और उसके कौन से आरे में हुआ था ?
प्रश्न 3. : महावीर स्वामी का जन्म कौन से द्वीप और कौन से क्षेत्र में हुआ था ?
प्रश्न 4. : महावीर स्वामी के जीव को कौन से भव में समकित की स्पर्शना हुई ?
प्रश्न 5. : महावीर स्वामी ने नयसार के भव में समकित कैसे प्राप्त किया ?
नोट : सही उत्तर देने वाले सौभाग्यशाली 4 प्रतिभागियों को रुपये 500/- की नगद राशि से पुरस्कृत किया जाएगा एवं विजेताओं के नाम एवं प्रश्नों के सही उत्तर प्रत्येक जैन प्रकाश साप्ताहिक पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे।

प्रायोजक : श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञान प्रकाश योजना

उत्तर भेजने हेतु संपर्क सूत्र - श्री नरेन्द्र जैन - राष्ट्रीय मंत्री ज्ञान प्रकाश योजना : 98101 63165

जैन कॉन्फ्रेंस की सदस्यता एवं जैन कॉन्फ्रेंस की विविध योजनाओं के फॉर्म के लिए स्कैन करें :

- जैन कॉन्फ्रेंस आजीवन सदस्यता फॉर्म
- जीवन प्रकाश योजना उच्च शिक्षा सहायता फॉर्म
- जीवन प्रकाश योजना चिकित्सा सहायता फॉर्म
- मानव सेवा योजना (विधवा पेंशन) फॉर्म
- जीवदया योजना फॉर्म

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES POLUR
varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR • TIRUVANAMALAI • VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606-803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906